Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 5, October-2022, ISSN 2230-7540

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में भौगोलिक विवेचन एवं पारिस्थितिकी का अध्ययन

Ms. Krishna Sharma[1]*, Mohd. Kaish[2]

[1] Research Scholar, Department of Earth Science, Banasthali Vidyapith

[2] Faculty of Earth Sciences, Banasthali Vidyapith

सार - राजस्थान भारत का एक ऐसा राज्य है जिसकी भौगोलिक विशेषताओं के बारे में आप जितना जानने की कौशिश करते है, यह जगह आप को उससे कहीं ज्यादा आश्चर्यचकित करती है। यह राज्य भौगोलिक रूप से इतना ज्यादा समृद्ध है की इस राज्य में सिर्फ बर्फ और समुंदर ही नहीं है । राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित इस राष्ट्रीय उद्यान को केवला देव राष्ट्रीय उद्यान या केवला देव घाना पक्षी विहार के नाम से जाना जाता है, यह राष्ट्रीय उद्यान भारत के सबसे प्रसिद्ध पक्षी अभ्यारण्य में से एक है, सर्दियों के मौसम में इस अभ्यारण्य में हजारों के संख्या में प्रवासी पक्षी प्रवास करने के लिए आते है, यह राष्ट्रीय उद्यान लगभग 370 पक्षियों की प्रजातिया का घर है, सर्दियों के मौसम में इस उद्यान में प्रवासी पक्षियों का जमावड़ा रहता है। और इसी कारण यह राष्ट्रीय उद्यान पक्षीविदों, वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर और पर्यटकों की पसन्दीदा जगहों में से एक है।

संकेतशब्द - भौगोलिकए राष्ट्रीय उद्यान, पर्यटक, अभ्यारण्य

----------X----------

परिचय

केवला देव राष्ट्रीय उद्यान एक मानव निर्मित उद्यान है, भरतपुर के महाराजा सूरजमल ने 250 वर्ष पूर्व इस पक्षीविहार का निर्माण करवाया था द्य इस उद्यान के मध्य में भगवान शिव का मंदिर है जिन्हें यहाँ केवलादेव के नाम से जाना जाता है, इसलिए इस उद्यान का नाम केवलादेव रखा गया।

इस स्थान पर एक प्राकृतिक ढ़लान बनी हुई है इस वजह से उस समय बारिश के मौसम में इस स्थान पर बाढ़ की स्थिति बन जाती थी, जिससे बचने के लिए महाराजा सूरजमल ने यहाँ 1726.1763 के मध्यकाल में यहाँ पर अजान बांध का निर्माण करवायाद्य इस बांध का निर्माण यहाँ बहने वाली दो नदियां गंभीरी और बाणगंगा के संगम स्थल "Gambhiri and Banganga Sangam" पर किया गया है ।

1850 के बाद से भरतपुर के राजाओ ने इस स्थान को शिकारगाह के रूप इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। इसके साथ ही राजा ने ब्रिटिश वाइसराय को खुश रखने के लिए इस पक्षीविहार में सालाना पक्षियों के शिकार के आयोजन शुरू कर दिए। 1938 में तत्कालीन भारत के ब्रिटिश वाइसराय लार्ड लिनलिथगो ने अपने सहयोगी विक्टर होप के साथ एक दिन में करीब 4ए273 से अधिक पक्षियों का शिकार किया था, जिसमे सबसे अधिक संख्या में मॉलर्ड्स और टील्स "डंससंतके ंदक ज्मंसे" जैसे पक्षियों का शिकार उस एक दिन में किया गया।

राजस्थान वन अधिनियम 1953 के तहत इस पक्षी विहार को एक आरक्षित वन की श्रेणी में शामिल किया गया, इस पक्षीविहार में आखरी शिकार का आयोजन 1964 में आयोजित किया गया था, भरतपुर के पूर्व महाराजा के पास 1972 तक यहाँ पर शिकार करने के अधिकार सुरक्षित थे । 13 मार्च 1976 को इस क्षेत्र को पक्षी अभ्यारण का दर्जा दे दिया गया, तथा वर्ष 1981 के अक्टूबर महीने में वेटलैंड कन्वेंशन के अंतर्गत इस जगह को रामसर साइट का दर्जा दिया गया।

www.ignited.in

इस पक्षीविहार Bird Sanctuary को 10 मार्च 1982 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिल गया उसके बाद से इस पक्षीविहार का नाम केवलादेव घाना पक्षीविहार हो गया। 1985 में आयोजित वर्ल्ड हेरिटेज कन्वेशन में इस राष्ट्रीय उद्यान को यूनेस्को वर्ल्ड हेरीटेज साइट घोषित कर दिया गया।

एक राष्ट्रीय उद्यान घोषित हो जाने के बाद सरकार ने 1982 में सरंक्षित वन के अंदर खेती करना और पालतू जानवर को चारा चराने और चारा ले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया जिसके बाद से इस क्षेत्र को लेकर स्थानीय निवासियों और सरकार में कई हिंसक झड़प हुई, अंततः 2004 में सरकार को किसानों की मांगों को मानना पड़ा, इसके बाद इस पक्षीविहार में भेजे जाने वाले पानी में सरकार ने भारी कटौती कर दी।

इस उद्यान में पहले दी जाने वाली जल आपूर्ति 15,000,000 घनफुट से कम हो कर मात्र 510,000 घनफुट रह गई। सरकार के इस निर्णय के बाद से इस उद्यान के प्राकर्तिक वातावरण में भारी बदलाव देखेने को मिले जो की बहुत ही भयानक थे, पानी में कटौती के बाद यहाँ की अधिकतम दलदली जमीन सुख कर बेकार हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप यहां प्रजनन के लिए आने वाले अधिकांश प्रवासी पक्षी अब उड़ कर इस स्थान से 90 किलोमीटर दूर गंगा नदी के पास स्थित उत्तप्रदेश के गढ़मुक्तेश्वरी तक चले जाते है।

राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित केवला देव राष्ट्रीय उद्यान भारत का एक प्रसिद्ध पक्षी अभ्यारण्य होने के साथ-साथ वन्यजीवन पसन्द करने वालों के लिए प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है, इस पक्षी विहार में पूरे वर्ष हजारों की संख्या में प्रवासी पक्षी प्रजनन के लिए आते है। सर्दियों के मौसम में यहाँ आने वाले प्रवासी पक्षियों की संख्या लगभग दुगनी हो जाती है।

केवला देव राष्ट्रीय उद्यान एक मानव निर्मित पक्षीविहार है यह राष्ट्रीय उद्यान लगभग 29 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है, भारत के दूसरे राष्ट्रीय उद्यानों के विपरीत इस पक्षी विहार का कोई बफर जोन नहीं है। इसका मुख्य कारण इस पक्षीविहार के आसपास मानव आबादी का घनत्व बहुत ज्यादा है, मुख्य शहर भरतपुर से इस राष्ट्रीय उद्यान की दूरी मात्र 2 किलोमीटर है, और लगभग आसपास के 15 गाँव के सीमायें इस राष्ट्रीय उद्यान के लगती है जिसके कारण इस राष्ट्रीय उद्यान का विस्तार करना सरकार के लिए असंभव है।

इस पक्षीविहार का एक तिहाई हिस्सा जलमग्न है, इस पक्षीविहार में जलमग्न पोधों के साथ उगे हुये पेड़,टीले,डाइक और दलदल आदि पाये जाते है जो की यहाँ आने वाले प्रवासी पक्षियों के प्रजनन के लिए अनुकूल वातावरण बनाते है।

पर्यावरण पर्यटन का बढ़ता कारोबार

पर्यटन आज दुनिया के सबसे बड़े उद्योगों में से है और पर्यटन उद्योग का सबसे तेजी से फैलता क्षेत्र पर्यावरण पर्यटन है। कोस्टा रिका और बेलिज जैसे देशों में विदेशी मुद्रा अर्जित करने का सबसे बड़ा स्रोत पर्यटन ही है जबकि ग्वाटेमाला में इसका स्थान दूसरा है। समूचे विकासशील ऊष्णकटिबंधीय क्षेत्र में वन्य जीव संरक्षित क्षेत्र प्रबंधकों और स्थानीय समुदायों को आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के बीच संतुलन कायम करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। पर्यावरण पर्यटन भी इस महत्वपूर्ण संतुलन का एक पक्ष है। सुनियोजित पर्यावरण पर्यटन से संरक्षित क्षेत्रों और उनके आसपास रहने वाले समुदायों को लाभ पहुंचाया जा सकता है। इसके लिए जैव विविधता संरक्षण के दीर्घावधि उपायों और स्थानीय विकास के बीच समन्वय कायम करना होगा।

सामान्य शब्दों में पर्यावरण पर्यटन या इको टूरिज्म का अर्थ है पर्यटन और प्रकृति संरक्षण का प्रबंधन इस ढंग से करना कि एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकताएं पूरी हों और दूसरी तरफ स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार - नए कौशल, आय और महिलाओं के लिए बेहतर जीवन स्तर सुनिश्चित किया जा सके। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2002 को अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण-पर्यटन वर्ष के रूप में मनाए जाने से पर्यावरण पर्यटन के विश्वव्यापी महत्व, उसके लाभों और प्रभावों को मान्यता मिली। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण पर्यटन वर्ष ने हमें विश्व स्तर पर पर्यावरण पर्यटन की समीक्षा और भविष्य में इसका स्थायी विकास सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त साधनों और संस्थागत ढांचे को मजबूत करने का अवसर प्रदान किया। इसका अर्थ है कि पर्यावरण पर्यटन की खामियां और नकारात्मक प्रभाव दूर करते हुए इससे अधिकतम आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक लाभ प्राप्त किए जा सकें।

पर्यावरण पर्यटन को अब सब रोगों की औषधि के रूप में देखा जा रहा है जिससे भारी मात्रा में पर्यटन राजस्व मिलता है और पारिस्थितिकी प्रणाली को कोई क्षति नहीं

www.ignited.in

पहुंचती क्योंकि इसमें वन संसाधनों का दोहन नहीं किया जाता। एक अवधारणा के रूप में पर्यावरण पर्यटन को भारत में हाल ही में बल मिला है, लेकिन एक जीवन पद्धति के रूप में भारतीय सदियों से इस अवधारणा पर अमल कर रहे हैं। पर्यावरण पर्यटन को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया गया है। इंटरनेशनल इको टूरिज्म सोसायटी ने 1991 में इसकी परिभाषा इस प्रकार की थीः "पर्यावरण पर्यटन प्राकृतिक क्षेत्रों की वह दायित्वपूर्ण यात्रा है जिससे पर्यावरण संरक्षण होता है और स्थानीय लोगों की खुशहाली बढ़ती है।"

सार्वजनिक पर्यटन से इसका अर्थ भिन्न है, जिसका लक्ष्य प्रकृति का दोहन है। संरक्षण, स्थिरता और जैव-विविधता पर्यावरण पर्यटन के तीन परस्पर सम्बंधित पहलू हैं। विकास के एक साधन के रूप में पर्यावरण पर्यटन 'जैव विविधता समझौते' के तीन बुनियादी लक्ष्यों को हासिल करने में मदद दे सकता हैः

- संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन प्रणालियां (सार्वजनिक या निजी) मजबूत बनाकर और सुदृढ़ पारिस्थितिकी प्रणालियों का योगदान बढ़ाकर जैव-विविधता (और सांस्कृतिक विविधता) का संरक्षण।
- पर्यावरण पर्यटन और सम्बंधित व्यापार नेटवर्क में आमदनी, रोजगार और व्यापार के अवसर पैदा करके जैव विविधता के स्थायी इस्तेमाल को प्रोत्साहन, और
- स्थानीय समुदायों और जनजातीय लोगों को पर्यावरण-पर्यटन गतिविधियों के लाभ में समान रूप से भागीदार बनाना और इसके लिए पर्यावरण पर्यटन की आयोजना और प्रबंधन में उनकी पूर्ण सहमति एवं भागीदारी प्राप्त करना।

पर्यावरण पर्यटन का सिद्धांतों, दिशा-निर्देशों और स्थिरता के मानदंडों पर आधारित होना इसे पर्यटन क्षेत्र में विशेष स्थान प्रदान करता है। पहली बार इस धारणा को परिभाषित किए जाने के बाद के वर्षों में पर्यावरण पर्यटन के अनिवार्य बुनियादी तत्वों के बारे में आम सहमति बनी है जो इस प्रकार हैः भली-भांति संरक्षित पारिस्थितिकी तंत्र पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, विभिन्न सांस्कृतिक और साहसिक गतिविधियों के दौरान एक जिम्मेदार, कम असर डालने वाला पर्यटक व्यवहार, पुनर्भरण न हो सकने वाले संसाधनों की कम से कम खपत, स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी, जो प्रकृति, संस्कृति और परम्पराओं के बारे में पर्यटकों को प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराने में सक्षम होते हैं और अंत में स्थानीय लोगों को पर्यावरण पर्यटन प्रबंधन के अधिकार प्रदान करना ताकि वे जीविका के वैकल्पिक अवसर अपनाकर संरक्षण सुनिश्चित कर सकें तथा पर्यटक और स्थानीय समुदाय, दोनों के लिए शैक्षिक पहलू शामिल कर सकें।

केवला देव राष्ट्रीय उद्यान की वनस्पति वन्यजीव

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को केवलादेव घाना पक्षीविहार के नाम से भी जाना जाता हैद्य यह राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान का अर्ध-शुष्क और घनी वनस्पति वाला एक मानव निर्मित वन क्षेत्र है, एक मानव निर्मित उद्यान होने के बावजूद भी इस पक्षीविहार की वनस्पति बहुत ज्यादा समृद्ध है, इस वजह से भी इस उद्यान को घाना पक्षीविहार नाम से बुलाया जाता है, "घाना का मतलब होता है मोटा या घना"।

यह क्षेत्र एक उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन है, पानी की कमी के कारण इस जंगल का अधिकांश क्षेत्र सुख चुका है इस वजह से अब यहाँ कुछ जगह सूखे घास के मैदान दिखाई देते है। बचे हुए दलदली क्षेत्र को यहां कृत्रिम रूप से पानी देकर प्रबंधित किया जाता है। इस पक्षीविहार के अधिकांश क्षेत्र में आप को मध्यम आकर के पेड़ और झाड़िया देखने को मिलती है, जंगल के उत्तर और पूर्व भाग में कदम,जामुन,बबूल जैसे वृक्षों की संख्या ज्यादा देखने को मिलती है।

शुले दलदली इलाकों में कंडी, बेर, केर जैसी वनस्पति पर स्क्रबलैंड का प्रभुत्व देखने को मिलता है। नमकीन मिट्टी में पाये जाने वाला लकड़ी का पौधा पिलु भी इस पार्क में अंदर पाया जाता है, इस पक्षी विहार की जलीय वनस्पति भी बहुत समृद्ध है जिसका फायदा यहाँ प्रवास करने वाले जलपक्षी को मिलता है।

एक प्रसिद्ध पक्षीविहार विहार होने के साथ साथ इस राष्ट्रीय उद्यान का वन्यजीवन बहुत ही समृद्ध है हालांकि इस उद्यान में कोई बड़ा शिकारी जानवर देखने को नहीं मिलता है। यह राष्ट्रीय उद्यान वुडलैंड्स, वुडलैंड दलदलों , आद्रभूमि और सूखे घास के मैदान जैसी विविध वनस्पति से भरा हुआ है ।

और ऐसी ही विवधता आप को यहाँ के वन्यजीवन में देखने को मिलती है इस राष्ट्रीय उद्यान में 370 पक्षी प्रजातियां, 379 फूलों की प्रजातियां, मछलियों की 50 प्रजातियां, साँपो की 13 प्रजातियां, छिपकलियों की 5 प्रजातियां, 7 उभयचर प्रजातियांद्य भारत में पाये जाने

वाली 10 कछुओं की प्रजातियों में से 7 प्रजातियां इस राष्ट्रीय उद्यान में पायी जाती है।

केवलादेव घाना पक्षीविहार विश्व में सबसे ज्यादा प्रवासी पक्षियों वाले वन क्षेत्र में से एक है यह पक्षीविहार बगुलों, सारस, और जलकाग जैसे पक्षियों को प्रजनन के अनुकूल वातावरण प्रदान करता है, और यहाँ बड़ी संख्या में आने वाली बत्तखों का पसंदीदा शीतकालीन प्रवास स्थल है।

इस उद्यान में सामान्यतः जलपक्षीयों में आपको गैडवाल, फावड़ा, सामान्य चैती, कपास की चैती, गुच्छेदार बत्तख, घुंडी-बंधे बत्तख, छोटे जलकाग, महान जलकाग , भारतीय शग, रफ, चित्रित सारस, सफेद चम्मच, एशियन ओपन-बिल्ड स्टॉर्क, ओरिएंटल इबिस, डार्टर , आम सैंडपाइपर, लकड़ी सैंडपाइपर और ग्रीन सैंडपाइपर देखने को मिल जाते है ।

अगर आप की किस्मत अच्छी है तो सारस क्रेन अपने जोड़े के साथ डांस करता हुआ दिखाई दे सकता है। कुछ ऐसे प्रवासी पक्षी भी जो आपको पुरे साल देखने को मिल सकते है जैसे वॉर्ब्लर, बेबीब्लर, मधुमक्खी खाने वाले, बुलबुल, बंटिंग, चाट, पेंटेड फ्रेंकोलिन और बटेर, भारतीय ग्रे हॉर्नबिल और मार्शल का आयरा शामिल हैं।

रैपर्स में ओस्प्रे, पेरग्रीन फाल्कन, पलास का समुद्री ईगल, शॉर्ट-टो ईगल, टैवी ईगल, शाही ईगल, चित्तीदार ईगल और क्रेस्टेड सर्प ईगल शामिल हैं। चित्तीदार बाज ने अभी कुछ समय पहले ही यहां प्रजनन करना शुरू किया है प्रवासी पक्षियों द्वारा भारत में प्रजनन का यह एक नया रिकॉर्ड है।

इस राष्ट्रीय उद्यान में एक समय में सर्दियों के मौसम साइबेरियन क्रेन बहुत ज्यादा मात्रा में प्रवास किया करते थे और इस उद्यान में आकर्षण का सबसे बड़ा केंद्र थे लेकिन कुछ समय से इस पक्षीविहार में यह प्रजाति नहीं दिखाई दे रही हैद्य ऐसा अनुमान है की साइबेरियन क्रेन की प्रवास यात्रा लगभग 5000 मील की होती है।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में स्तनधारी जीवों की 27 प्रजातियां पाई जाती है। इस उद्यान में आमतौर पर आपको नीलगाय, चीतल हिरण बड़ी आसानी से देखने को मिल सकते है यहाँ पर सांभर बहुत कम संख्या में पाये जाते है। जंगली सुअर और भारतीय दलिया अकसर इस उद्यान की सीमाओं के बाहर किसानों के खेतों में देखे जाते है। इस उद्यान में मंगूस (नेवला) की दो प्रजातियां पाई जाती है स्माल इंडियन मंगूस और कॉमन ग्रे मंगूस।

और बिल्ली की प्रजातियों में जंगली बिल्ली और मछली पकड़ने वाली बिल्ली दिखाई दे जाती है। एशियन पाम सिवेट और छोटे भारतीय सिवेट भी इस पक्षीविहार में है लेकिन शायद की कभी किसी पर्यटक ने इन्हें देखा होगा। इस उद्यान के छोटे मांसाहारियों में आप को स्मूथ कोटेड औटर, गोल्डन जैकल्स, धारीदार लकड़बग्घा, बंगाल लोमड़ी और पार्क में चूहों, गेरबिल और चमगादड़ों की कई प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं। प्राइमेट्स में रीसस मकाक और हनुमान लंगूर शामिल हैं। इस उद्यान में बड़े शिकारी जानवर देखने को नहीं मिलते है।

पक्षी अभ्यारण्य की सुरक्षा के लिए उठाए जा रहे अहम कदम

डीसीएफ मोहित गुप्ता बताते हैं कि केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में पिछले एक से डेढ़ साल में मल्टिपल टाइम लॉकडाउन लगे तो हमने मनरेगा योजना के तहत मजदूरों से काम करवाना शुरू किया ताकि ऐसे में उनकी भी मदद हो सके। उस दौरान मजदूरों का ज्यादा काम दिला कर हेबीटाट इम्प्रूवमेंट के कार्य करवाए गए। इसके तहत करीब 600 से 650 मजदूर रोजाना इस पार्क में काम कर रहे थे, जिसमें वैटलैंड के अंदर डीशिफ्टिंग का अहम कार्य किया गया। विलायती बगुल के रिमूवल का काम हो या ग्रास लैंड मैनेजमेंट इत्यादि कार्य इन सबमें हमें काफी फायदा मिला। इससे आसपास के गांवों में भी हमारा अच्छा नाम हुआ।

बच्चों और देश के रिसर्चरों को भविष्य में मिल सकेंगे कई लाभ

आगे की योजना को लेकर मोहित गुप्ता बताते हैं कि इस वैटलैंड को "वैटलैंड बर्ड कंजरवेशन सेंटर" के रूप में विकसित करने की घोषणा इसी साल की गई है, जिसके तहत हमने यहां कार्य शुरू कर दिया है। ऐसे में अगले आने वाले एक से डेढ़ साल में यहां पर काफी नई चीजें लाई जाएंगी, जिससे कि खासकर स्कूली बच्चों को लोकल लैंग्वेज में पक्षियों व पेड़ों की अच्छी जानकारी मिल पाएगी। इसके साथ-साथ यह जानकारी ऑनलाइन माध्यम से भी मिले हमारी ओर से ऐसी कोशिश की जा रही है। इन सबके अलावा एक ओपन रिसर्च डेटा सेंटर का भी प्लान किया जा रहा है, जिसकी मदद से देश के तमाम रिसर्चरों व इंडिपेंडेंट रिसर्चर को यहां से पूरे देश के पक्षियों का डाटा मिलने की उम्मीद रहेगी।

www.ignited.in

निष्कर्ष

पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए स्थानीय लोगों व राज्य सरकार द्वारा सामूहिक प्रयास जो किये जा रहे है उन्हें और बढ़ाना चाहिए। पर्यावरण को दूषित होने से रोकने के लिए समय पर सेमिनार, संगोष्ठयाँ, आयोजन तथा साथ ही राज्य सरकार व केन्द्रिय सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण संबधी दिषा-निर्देश जारी करते हुए देषी-विदेषी पर्यटकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। आवष्यक है कि हम पर्यटन एवं पर्यावरण के मध्य अन्योन्य क्रियाओं को ठीक से समझे और उसके अनुसार अपने क्रियाकलापों में परिवर्तन करें। ताकि पर्यटन की क्रियाओं द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों से पर्यावरण को सुरक्षा प्रदान की जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पर्यावरण अध्ययन की रूप रेखा, मेघा तिथी जोष आर.बी.डी. पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. भारत में आर्थिक पर्यावरण, डाॅ. बी.पी. गुप्ता, डाॅ. एचआर. स्वामी आर.बी.डी. पब्लिकेशन नई दिल्ली।
3. नेगी, जे. एम.एस. (1989): पर्यटन एवं पर्यावरण।
4. मृदुला एवं दत्त, नारायण (1991)ः "पारिस्थैतिकी एवं पर्यटन" यूनिवर्सल प्रेस दिल्ली।
5. शिव कुमार तिवारी विश्व पर्यटन एवम् यात्रा उद्योग, 1986, आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली।
6. पर्यावरण पर्यटन एवं लोक संस्कृति, ताज रावत (प्रेस)
7. राष्ट्रीपर्यटन नीकत 2002 पर्यटन कवभाग, पर्यटन एवां सांस्कृ कत मांत्रराि भारत सरिार पृ.28
8. शिवेन्द्र नारायण सिंह, भारत का आर्थिक संकट और अवमूल्यन योजना 31 अक्टूबर (1991) पृ0 7
9. अभय कुमार, मुद्रा स्मीति एवं भुगतान संतुलन की समस्या योजना 28 फरवरी 1993 पृ0 14
10. ब्रज किशोर मानव, भारत में पर्यटन की ब ती सम्भावनायें, योजना 16-31 मार्च, (1991) पृ0 27
11. जय प्रकाश झा, बिना चिमनी एवं धुयें का उद्योग, पर्यटन योजना 31 मई 1993 पृ0 16

Corresponding Author

Ms. Krishna Sharma*

Research Scholar, Department of Earth Science, Banasthali Vidyapith